कुमार जीवन - 14

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ अभी गुप्त धारणा का रूप नहीं रखना है। कई ऐसे समझते हैं कि ज्ञान गुप्त है, बाप गुप्त है तो धारणा भी गुप्त ही है। ज्ञान गुप्त है, बाप गुप्त है लेकिन उन द्वारा जो धारणाओं की प्राप्ति होती है वह गुप्त नहीं हो सकती है। **तो धारणाओं को वा प्राप्ति को प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ तब प्रत्यक्षता होगी।**

➳ _ ➳ विशेष करके कुमारों में एक संस्कार होता है जो पुरुषार्थ में विघ्न रूप होता है। वह कौन-सा? कुमारों में यह संस्कार होता है जो कामनाओं को पूर्ण करने के लिए संस्कारों को रख देते हैं। जैसे जेब-खर्च रखा जाता है ना। जैसे राजाओं की राजाई तो छूट गयी लेकिन पिरवी पर्श को नहीं छोड़ते। इसी रीति संस्कारों को कितना भी खत्म करते हैं लेकिन जेब-खर्च माफिक कुछ-न-कुछ किनारे रखते ज़रूर हैं। यह है मुख्य संस्कार। यहाँ भट्ठी में जानते भी हैं और चलने की हिम्मत भी धारण करते हैं लेकिन फिर भी माया पिरवी पर्श की रीति से कहाँ-न-कहाँ किनारे में रह जाती है। समझा? तो इस भट्ठी में सभी त्याग करके जाना। यह नहीं सोचना कि सम्पूर्ण तो अभी अन्त में बनना है तो थोड़ा बहुत रहेगा ही। लेकिन नहीं। त्याग अर्थात् त्याग। **जेब-खर्च माफिक अपने अन्दर थोड़ा बहुत भी संस्कार रहने नहीं देना है। समझा। जरा भी संस्कार अगर रहा होगा तो वह थोड़ा संस्कार भी धोखा दिला देता है। इसलिए बिल्कुल जो पुरानी जायदाद है, वह भस्म कर के जाना। छिपाकर नहीं रखना।** समझा? अच्छा।

➳ _ ➳ यह कुमार ग्रुप है। अभी बनना है तपस्वी कुमार ग्रुप। इस ग्रुप की यह विशेषता सभी को दिखाई दे कि यह तपस्वी कुमार, तपस्वी-भूमि से आये हैं। समझा? हरेक लाइट के ताजधारी दिखाई दें। ताजधारी तो भविष्य में बनेंगे। लेकिन इस भट्ठी से **लाइट के ताजधारी बनकर जाना है। सर्विस की ज़िम्मेवारी का ताज वह इस ताज के साथ स्वत: ही प्राप्त हो जाता है।** इसलिए मुख्य ध्यान इस लाईट के ताज धारण करने का रखना है। समझा? जैसे तपस्वी सदैव आसन पर बैठते हैं, वैसे **अपनी एकरस आत्मा की स्थिति के आसन पर विराजमान रहो। इस आसन को नहीं छोड़ो, तब सिंहासन मिलेगा।** ऐसा प्रयत्न करो जो देखते ही सब के मुख से एक ही आवाज़ निकले कि यह कुमार तो तपस्वी कुमार बनकर आये हैं। **हर कर्मेन्द्रिय से देह अभिमान का त्याग और आत्मअभिमानी की तपस्या प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे।**

➳ _ ➳ क्योंकि ब्रह्मा की स्थापना का कार्य तो चल ही रहा है। ईश्वरीय पालना का कर्त्तव्य भी चल ही रहा है। अब लाइट में तपस्या द्वारा अपने विकर्मो और हर आत्मा के तमोगुण और प्रकृत्ति के तमोगुणी संस्कारों को भस्म करने का कर्त्तव्य चलना है। अब समझा कि कौन-से कर्त्तव्य का अभी समय है? **तपस्या द्वारा तमोगुण को भस्म** करने का। जैसे अपने चित्रों में शंकर का रूप विनाशकारी अर्थात् तपस्वी रूप दिखाते हैं, ऐसे एक रस स्थिति के आसन पर स्थित हो तपस्वी रूप अपना प्रत्यक्ष दिखाओ। समझा क्या सीखना और क्या और कैसे बनना है। ➳ _ ➳ इसके लिए यह कुमार ग्रुप मुख्य सलोगन क्या सामने रखेंगे जिससे सफलता हो जाये? **सच्चाई और सफाई से सृष्टि से विकारों का सफाया करेंगे। जब सृष्टि से करेंगे तो स्वयं से तो पहले से ही हो जायेगा तब**

तो सृष्टि से करेंगे ना। तो यह सलोगन याद रखने से तपस्वीमूर्त्त बनने से सफलतामूर्त्त बनेंगे। समझा? **(19.04.1971)**

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳ _ ➳ जिनकी धारणाएं गुप्त रहेंगी... जिनकी प्राप्तियां गुप्त हो जायेंगी

→ वह भी अंत में गुप्त ही हो जायेंगे

➳ _ ➳ साधनों के आधार पर सेवा न करें

➳ _ ➳ कर्मशेत्र पर , सेवा स्थान पर की गयी साधना ही असली तपस्या है

→ तभी आपकी सच्ची साधना का पता चलता है

➳ _ ➳ जितनी जितनी श्रेष्ठ स्थिति बनायेंगे... अशरीरी अवस्था का भ्यास बढाएंगे

→ आपको सेवा मांगने की जरूरत नहीं पड़ेगी

- सेवा खुद चलकर आपके पास आएगी

➳ _ ➳ सारा पुरुषार्थ हम इसीलिए कर रहे हैं

→ ताकि हम अपनी सीट कभी न छोडें

→ अपने स्वमान को कभी न भूलें

→ हमारी स्थिति एकरस रहे

➳ _ ➳ नॉलेजफुल अर्थात

→ <u>नॉलेज का हर पॉइंट हर कर्मेन्द्रिय में समा जाए</u>

- हमें यह सोचना ही न पड़े की
  - हमें क्या देखना है ? और क्या नहीं देखना है ?
  - हमें क्या बोलना है और क्या नहीं बोलना है ?
- सब कुछ आटोमेटिक हो जाए
  - हमारी यह नेचर नेचुरल हो जाए